''हम लोगों को समझाते हैं''

2 कुरिन्थियों 5:11क में पौलुस ने कहा था, ''सो प्रभु का भय मानकर हम लोगों को समझाते हैं।'' आइए इस संक्षिप्त कथन पर विचार करते हैं, क्योंकि इसमें कई उपयोगी शिक्षाएं हैं।

''प्रभु का भय''

पौलुस ने कहा था, कि वह लोगों को समझाता है क्योंकि वह ''प्रभु के भय'' को जानता है। यह परमेश्वर का एक गुण है जिसकी कभी-कभी लोग उपेक्षा कर देते हैं। परमेश्वर भला भी है और कठोर भी है (रोमियों 11:22)। जब दया करनी होती है तो वह दया भी करता है, परन्तु जब कठोर होना पड़े तो वह कठोर भी होता है।

हमने देखा कि लोग एक व्यक्तिगत परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करते हैं और कहते हैं कि प्रकृति ही उनका परमेश्वर है। उन्हें व्यक्तिगत परमेश्वर की बात अच्छी नहीं लगती जो कभी-कभी कठोरता भी दिखाता है। वे यह सोचने के लिए नहीं रुकते कि प्राकृतिक जगत की अच्छी विशेषताओं के अलावा, प्रकृति की शक्तियों का भी एक डरावना पहलू है।

समस्त पुराने नियम में परमेश्वर की भलाई और उसका क्रोध दिखाई देता है। अदन की वाटिका में परमेश्वर की भलाई दिखाई देती है, परन्तु वाटिका में से मनुष्य का निकाला जाना परमेश्वर की कठोरता को दिखाता है। कई वर्षों तक परमेश्वर मनुष्य के साथ धैर्य करके उसे सहन करता रहा, फिर भी पुराने नियम में मनुष्य का इतिहास जल प्रलय, सदोम और अमोरा के विनाश, मिसरी सेना के विनाश, और बहुत सी ऐसी घटनाओं से भरा पड़ा है।

इसी प्रकार, जब पौलुस ने ''प्रभु का भय'' कहा तो उसके कहने का अर्थ परमेश्वर का वह क्रोध था जो न्याय के दिन प्रकट हो जाएगा। पौलुस ने फेलिक्स के सामने आने वाले न्याय का प्रचार किया और फेलिक्स ''भयमान'' हो गया अर्थात कांप गया (प्रेरितों 24:25)। था। हमें भी कांपना चाहिए, ''क्योंकि हमारा परमेश्वर भस्म करने वाली आग है'' (इब्रानियों 12:29); ''जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है'' (इब्रानियों 10:31)। परन्तु, फेलिक्स ने कहा नहीं माना। उसने सुसमाचार के संदेश को ग्रहण नहीं किया, बल्कि

कहा कि वह ''समय मिलने पर'' पौलुस को बुलाएगा। पता नहीं कि उसके जीवन में मसीह को ग्रहण करने का वह समय आया या नहीं।

''*हम* लोगों को समझाते हैं''

सुसमाचार का धन मिट्टी के बर्तनों में डाला गया है (2 कुरिन्थियों 4:7)। संसार को सुसमाचार देने का सौभाग्य स्वर्गदूतों को नहीं दिया गया। यह सम्मान तथा जिम्मेदारी मनुष्यों को ही दी गई है।

लोगों का उद्धार वचन का प्रचार करने से ही होता है (1 कुरिन्थियों 1:21)। इस अर्थ में, मनुष्य ही दूसरे मनुष्यों को बचाते हैं (याकूब 5:20)। निश्चय ही, बचाने वाली ज़ंजीर में मनुष्य के योग्दान को नये नियम के लेखकों ने एक मुख्य कड़ी माना है।

कई बार लोग पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मे की शिक्षा पर आपत्ति प्रकट करते हैं क्योंकि इससे उद्धार कुछ हद तक तीसरे पक्ष अर्थात मनुष्य पर निर्भर हो जाता है। विश्वास की शिक्षा में भी ऐसा ही है, क्योंकि विश्वास के लिए ज़रूरी है कि प्रत्येक व्यक्ति के पास जाकर वचन सुनाकर उसे समझाया जाए। (देखिए रोमियों 10:13, 14) इसलिए यह आपत्ति बपतिस्मे और विश्वास को दूर कर देती है।

''हम *लोगों को* समझाते हैं''

समझाने वाला परमेश्वर का संदेश केवल मनुष्य के लिए है ... पत्थरों, चट्टानों, समुद्रों या धूमकेतुओं के लिए नहीं। परमेश्वर को मनुष्य की चिन्ता है। उसने उसमें उन सभी तारों से जो चमकते हैं, अधिक दिलचस्पी दिखाई है।

उद्धार समझाने वाले परमेश्वर की बात नहीं है। ''धर्म पाने'' की मोरनर की बैंच प्रणाली परमेश्वर से बचाने का आग्रह करती है। हमें परमेश्वर को यह समझाने की आवश्यकता नहीं है कि वह हमें बचाए क्योंकि वह तो हमें बचाने के लिए हमेशा तैयार व उत्सुक है। वह हमें बुलाता है। याद रखें कि परमेश्वर और मनुष्य के बीच मतभेद इन्सान ने ही पैदा किए हैं। लौटने की आवश्यकता परमेश्वर को नहीं, वरन मनुष्य को है। ''परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर लो'' (2 कुरिन्थियों 5:20); यह मनुष्य के साथ परमेश्वर के मिलाप करने की बात नहीं है।

पौलुस ने लोगों को क्या करने के लिए समझाया था? एक आदमी ने उससे कहा था, ''तू थोड़े ही समझाने से मुझे मसीही बनाना चाहता है?'' (प्रेरितों 26:28)। पौलुस ने लोगों को किसी प्रकार के ''वाद'' में पड़ने के लिए नहीं समझाया था। उसने लोगों को किसी डिनोमिनेशन अर्थात साम्प्रदायिक कलीसिया में शामिल होने के लिए भी नहीं समझाया था। उसने लोगों को मसीही, और केवल मसीही बनने के लिए ही समझाया था।

''हम लोगों को *समझाते हैं*''

हम लोगों को मसीही बनाने के लिए जबरदस्ती नहीं करते। हम उन्हें धमकाते नहीं हैं।

इसके बजाय, हम उन्हें समझाते हैं। परमेश्वर भौतिक संसार पर शक्ति से राज्य करता है, परन्तु ऐसे वह मनुष्य पर राज्य नहीं करता। इसके बजाय, वह भीतर आने का निमन्त्रण पाने की इच्छा में, मनुष्य के हृदय के द्वार पर खड़ा होकर खटखटाता है (प्रकाशितवाक्य 3:20)।

लोगों को मसीह में लाने के लिए केवल शिक्षा ही एक ढंग है। यदि वे शिक्षा से जीते नहीं जा सकते, तो उन्हें जीत पाना असम्भव है। यूहन्ना 6:44, 45 यह दिखाता है कि परमेश्वर मनुष्य के साथ इस सिद्धांत पर काम करता है कि मनुष्य में अपने आप में स्वीकार करने की योग्यता नहीं है: ''कोई मेरे पास नहीं आ सकता, जब तक पिता, जिसने मुझे भेजा है, उसे खींच न ले; ... भविष्यवक्ताओं के लेखों में यह लिखा है कि वे सब परमेश्वर की ओर से सिखाए हुए होंगे। जिस किसी ने पिता से सुना और सीखा है, वह मेरे पास आता है।''

सारांश

क्या आप सुसमाचार के लिए ''समय मिलने'' की प्रतीक्षा कर रहे हैं? आपके पास कितना समय रह गया है? ''हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिन्त रहकर क्योंकर बच सकते हैं?'' (इब्रानियों 2:3क)।